ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन और नवजागरण काल

डॉ. प्रकाश नवनितराव सावते

कला व विज्ञान महाविद्यालय,तेलगाव

ता .माजलगाव जि.बीड

प्रस्तावना :

ब्रिटिश शासन सत्ता और सामंतवाद भारतीय स्वाधीनता और नवजागरण की चेतना के विकास में बाधक थीI ब्रिटिश शासन और सामंतवाद का गटजोड भारत में ब्रिटिश शासन को स्थायी और दृढ़ बनाने का कारगर हत्यार थाI अत: भारत में नवजागरण और स्वाधीनता का विकास साथ साथ होते हुए दिखाई देता हैI यूरोपीय देशों में राष्ट्रीय चेतना के विकास के बाद नवजागरण का मार्ग प्रशस्त हुआ थाI लेकिन भारत में नवजागरण का उदय विभिन्न सुधार आंदोलन के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन के उदय के पूर्व ही हो चुका थाI यहा भी ध्यान देने की बात है कि भारतीय नवजागरण ब्रिटिश शासन की इच्छा के विरुद्ध हुआ थाI नव जागरण का मूल स्वरूप धर्मनिरपेक्ष और मानवतावादी होता हैI भारतीय नवजागरण का आरंभिक स्वरूप भी यही था लेकिन प्राचीन संस्कृती के प्रति ग्रहण और त्याग को लेकर नवजागरण में प्रगति और पुनरुत्थान का मिश्रण बना रहा हैI भारत में नवजागरण को आरंभ से ही संदेह की दृष्टी से देखा गया थाI इसीलिए नवजागरण का विकास धीमी और संदेह के वातावरण में हुआI इस आंदोलन को राष्ट्रीयता की चेतना के उदय और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों की सुरुवात से बल तो मिला ही, तीव्रता भी मिलीI इसी दृष्टी से नवजागरण और स्वाधीनता की भावना में समानता हैI

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

हिंदी क्षेत्र में नवजागरण का नेतृत्व साहित्यकारों कियाI वैसे हिंदी भाषी क्षेत्र के नवजागरण का शुभारंभ गैर हिंदी लोगों ने कियाI हिंदी भाषी साहित्यकारों ने इसकी की कमान देर से संभालीI कलकत्ता नगर नवजागरण का उद्भव स्थल हैI यहीं सर्वप्रथम फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की गई और अंग्रेजों को हिंदी सिखाने के लिए अनेक भारतीय विद्वानों को रखा गयाI १८२९ में राजा राममोहन राय ने 'बंगदूत' नामक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया थाI इसके माध्यम से उन्होने नवजागरण की चेतना का प्रसार कियाI आश्चर्यजनक बात है कि, हिंदी का पहिला दैनिक पत्र 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

की बंगाल से ही हुआI इसके अलावा 'प्रजामित्र', 'मतवाला' जैसे प्रसिद्ध हिंदी पत्रों का प्रकाशन भी कलकत्ता से होता थाI इन पत्रिकाओ में नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैI

ब्रिटिश शासन और उनके अन्याय, शोषण के विरुद्ध अनेक साहित्यकारोने अपने साहित्य में लिखा हैI भारतेंन्दुजी ने अंग्रेजों के शोषण के ऊपर व्यंग्यात्मक रूप से प्रहार किया हैI

"भीतर भीतर सब रस चूसैI
हँसि हँसि कै तन मन धन मूसैI
जाहिर बातन मैं अति तेजI
क्या सखि साजन नहीं अँगरेजI"१

यहा पर आर्थिक शोषण, शारीरिक शोषण तथा सामाजिक शोषण को भारतेन्दु ने प्रस्तुत किया हैI

नवजागरण काल के उपन्यासों का प्रेरक तत्व समाज सूधार रहा हैI नवजागरण के आरंभिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उपन्यासों में 'भाग्यवती' (श्रद्धाराम किल्लौरी), परीक्षा गुरु (लाला श्रीनिवास दास) और आदर्श हिंदू, सुशीला विवाह (लज्जराम शर्मा मेहता) उल्लेखनीय हैI 'भाग्यवती' एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें बाल विवाह का विरोध और विधवा विवाह की आवश्यकता पर बल दिया गया हैI लाला श्रीनिवास दास ने 'परीक्षा गुरु' नामक उपन्यास की रचना की थीI रामचंद्र शुक्लने इस उपन्यास को अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास कहा हैI यह उपन्यास अपने समकालीन मध्यमवर्गी समाज और संपूर्ण देश की दशा का विस्तृत परिचय देता है I इसमें मानवीय दुर्बलतओं और सबलताओं को संयुक्त कर विवेक को प्रधानता दी गई हैI नायक ब्रजकिशोर विकासोन्मुख मध्यवर्ग का प्रतिनिधि चरित्र हैI वह देशप्रेमी है और देश की दुर्दशा से भी परिचित हैI राष्ट्रीय एकता के नाश को वह देश की अधोगति का कारण मानता हैI उसकी दृष्टी में हिंदुस्तान की अकर्मण्यता के कारण देश उन्नती नही कर पा रही हैI वास्तव में यह लाला श्रीनिवास दास की दूरदृष्टी का परिचायक हैI इस नवजागरण के तत्व विद्यमान हैI नवजागरण काल में जनसामान्य लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को जगाया और राष्ट्रप्रेम स्वाधीनता के लिए उनके मन में चेतना प्रदान कीI राष्ट्रीय चेतना से ओत प्रोत साहित्य की निर्मिती नवजागरण और उसके बाद के साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से की है भारतेंदू ने देश को ब्रिटीशों से मुक्त कराने के लिए हमारे क्रांतीकारियों ने अपने प्राणों के बलिदान देने को हमेशा तत्पर रहे है जो भारत माता को अंग्रेजो की गुलामी से मुक्त कराने को व्याकुल रहे हैI जैसे - "भारत लक्ष्मी पडी राक्षसों के बंधन में सिंधू पार वह बिलख रही है व्याकुल मन मे" २ भारतेन्दु जी ने आपने साहित्य में सर्वप्रथम देश प्रेम और राष्ट्रीय भावना का प्रसार किया हैI सबसे अधिक अभिव्यक्ती इनके नाटको में दिखाई देती हैI भारतेन्दु ने नाटकों के माध्यम से स्वाधीनता की भावना का संचार किया और राजनीतिक एवं सामाजिक जागृति का प्रसार किया हैI

नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु जी ने अपने साहित्य के माध्यम से जनता की चेतना को उद्यबुध्द कियाI इनके साहित्य मे जनजीवन में जो चेतना ला दी वह इस समय से पूर्व के सामूहिक प्रयत्नों से भी संभव नही थीI भारतेन्दु जी ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय भावना के साथ साथ देश प्रेम की भावना और देश से जो धन विदेशों में जा रहा था उस पर करारा प्रहार भी किया हैI वे कहते है -

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारीI

पैधन विदेश चलि जात यहै अति ख्वारीI ३

इस प्रकार भारतेन्दु जी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपने ढंग से आवाज उठाकर देश की आजादी का नारा बुलंद किया और आज की स्वतंत्रता के बीज बोयेI नवजागरण काल के साहित्यकारों ने राष्ट्रीय आंदोलन को किसान-मजदूर तक ले जाकर राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण की सांस्कृतिक का ठोस आधार प्रदान कियाI सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टी से अनुप्राचित थीI फिर सत्याग्रह के माध्यम से स्वाधीनता की भावना शहरो से लेकर गाँव तक पहुँचीI उन्होने स्वाधीनता की भावना को जन-जन तक फैलाने का बडा कार्य किया यह राष्ट्रीय जागरण सामाजिक जागरण से भी जुडा हुआ थाI देश की स्वतंत्रता के साथ जन-जन की स्वतंत्रता,समानता और बंधुता की भावना का मेल हुआI भारत में यह आवाज जनशक्ती की दिन हैI यही भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और नवजागरण की चेतना का आधार हैI स्पष्टता: स्वाधीनता की भावना और नवजागरण एक दूसरे के पूरक हैI एक के बिना दूसरे का अस्तित्व में आना बने रहना और स्वस्थ तथा ठोस रुप धारण करना असंभव है अत: दोनो के बीच गहरा अंत:संबंध हैI

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. भारतेन्दु हरिश्चंद्र – मुकरियाँ, पृष्ठ संख्या १२५ नये जमाने की मुकरी, संस्करण २०११,प्रकाशन ,भारतीय पुस्तक परिषद नई दिल्ली

२. मैथिलीशरण गुप्त-साकेत,पृ.सं.१३१, संस्करण १९३१

३. भारतेन्दु हरिश्चंद्र- भारत दुर्दशा, पृ.सं.१८४ संस्करण १८८०, प्रयाग प्रकाशन नई दिल्ली

Cite This Article:

डॉ. सावते प्र. न. (2024). *स्वाधीनता आंदोलन और नवजागरण काल*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 115–117) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10648769